कि बच्चा स्कूल जा रहा है...

निदा फ़ाज़ली

हुआ सवेरा
ज़मीन पर फिर अदब से आकाश
अपने सिर को झुका रहा है
नई फ़िज़ा में, नया उजाला
तमाम बस्ती सजा रहा है
कि बच्चा स्कूल जा रहा है...

नदी में अस्नान करके सूरज
सुनहरी मलमल की पगड़ी बाँधे
सड़क किनारे खड़ा हुआ मुस्कुरा रहा है

हवाएँ सरसब्ज़ डालियों में
दुआओं के गीत गा रही हैं
महकते फूलों की लोरियाँ
सोते रास्तों को जगा रही हैं
घनेरा पीपल, गली के कोने से
हाथ अपना हिला रहा है

फरिश्ता निकला है रोशनी का
हरेक रस्ता चमक रहा है
ये वक्त वो है ज़मीं का हर ज़र्रा
माँ के दिल-सा धड़क रहा है
पुरानी इक छत पे वक्त बैठा
कबूतरों को उड़ा रहा हूँ
कि बच्चा स्कूल जा रहा है

चित्र: सोनाली बिस्वास

पाँच चूहे

सूफी तबस्सुम

दो चूहे फिर मिलकर बैठे
दोनों ही थे नेक
एक चूहे को खा गई बिल्ली
बाकी रह गया एक

पाँच चूहे घर से निकले
करने चले शिकार
एक चूहा रह गया पीछे
बाकी रह गए चार

चार चूहे जोश में आकर
लगे बजाने बीन
एक चूहे को आई खाँसी
बाकी रह गए तीन

तीन चूहे डरकर बोले
घर को भाग चलो
एक चूहे ने बात न मानी
बाकी रह गए दो

एक चूहा जो रह गया बाकी
कर ली उसने शादी
बीबी उसको मिली लड़ाका
यूँ हुई बर्बादी